निष्कर्ष

''असाज़्प्रदायिक मसीहियत'' पाठ पर हमारा यह अध्ययन समाप्त होता है। इससे कुछ भलाई होने की उज़्मीद है। इसे लिखकर, मैंने अपना कोई ज्ञान या तर्क दिखाने का प्रयास नहीं किया है। मेरा एक ही लक्ष्य था और वह था इसे स्पष्ट और सरल भाषा में बताना, जिससे साधारण पाठक बिना किसी शज़्दकोश की सहायता लिए बाइबल की पुस्तक को पढ़ सके। यदि मेरी भाषा स्पष्ट थी, यदि मैं सरल ढंग से समझा पाया, यदि मैंने बाइबल की ही बात बताई है, तो मैं इससे संतुष्ट हूं। इसके अलावा अपने काम के बारे में मैं कुछ नहीं कहूंगा। यदि आलोचक इसकी आलोचना करना चाहते हैं, तो उन्हें उस शिक्षा की आलोचना करने दें।

मेरी प्रार्थना है कि आत्माओं के उद्धार के लिए, उसके पवित्र लोगों के एक होने के लिए और उसकी कलीसिया के मजबूत होने के लिए चाहे वह कहीं भी स्थापित हो, इस अध्ययन में सिखाई गई सच्चाई का इस्तेमाल की जाए। मेरी प्रार्थना है कि मेरे मरने के बाद लोग मेरे विषय में कहें, ''वह एक मसीही था,'' अर्थात मैं तन मन, जोश और उत्साह से यीशु मसीह का सच्चा अनुयायी था; कि मैं उसका और केवल उसी का था; कि यीशु को छोड़ मेरा और कोई राजा नहीं था; कि मेरी नागरिकता स्वर्ग में थी; और यह कि मैं इस पृथ्वी पर एक परदेशी और बाहर का आदमी था। भलाई करने के लिए बुराई रोकने के लिए दुष्टता पर काबू पाने के लिए और संसार को आशीष देने के मेरे सभी प्रयास उसके द्वारा और उसके लिए हैं; मेरे जीवन का उद्देश्य लोगों में उसके पवित्र जीवन को पैदा करना रहा है। यदि मेरे विषय में यह कहा जाता है कि मैंने अपना जीवन उसके लहू के लिए दे दिया, तो मुझे अपने लिए किसी और स्मारक की आवश्यकता नहीं होगी।